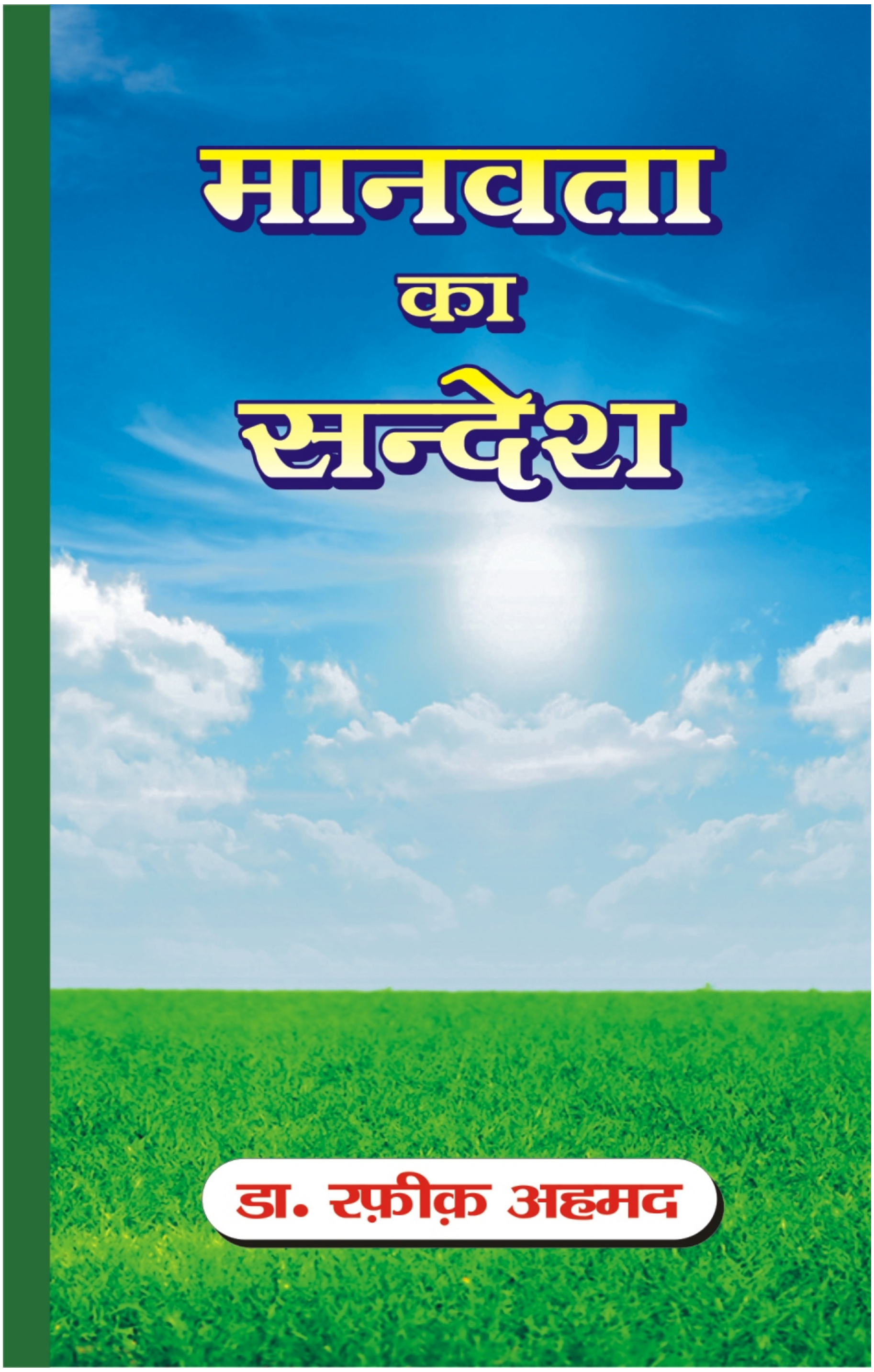
मानवता
का
सन्देश
डा. रफ़ीक़ अहमद

अपनी बात

वर्तमान काल में हम जिन परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं, वे अत्यन्त जटिल और भयावह हैं। इन्सान और इन्सान के मध्य दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ और धन लोलुपता के जाल में फँसा हुआ है। उसकी मनोवृत्ति भोगवादी हो गयी है। समाज में हिंसा, हत्या, वासना, बलात्कार, ईर्ष्या, द्वेष और भोगवादी मनोवृत्ति का वर्चस्व है। जबकि वास्तविकता यह है कि स्वार्थ, वासना और धन-दौलत से आदमी की भूख थोड़े समय के लिये तो मिट जाती है परन्तु उससे मन को स्थायी सुख-चैन और आराम व सुकून प्राप्त होने वाला नहीं है। चूँकि इन्सान ईश्वर के प्रति वास्तविक प्रेम और उसके सामीप्य की चाह से वंचित है इसलिये वह जीवन के मौलिक आनन्द और सुख से वंचित है। सच्ची मानवता से वंचित है । आज जिस इन्सान को ईश्वर का सच्चा बन्दा होना चाहिये था, वह दौलत का पुजारी और अपनी मनोकामनाओं का दास बना हुआ है। वह नहीं जानता कि स्थायी सुख-चैन और आराम व सुकून धार्मिक शिक्षाओं में ही निहित है। संसार में समय-समय पर मानव जाति के मार्गदर्शन के लिये महापुरुषों तथा ईश दूतों का आविर्भाव होता रहा है। जिन्होंने अपनी असीम निष्ठा, दूरदर्शिता, ईश्वर पर अटूट विश्वास, तपस्या और उपासना से मानव समाज का मार्गदर्शन एवं कल्याण किया। सभ्य मानव समाज के निर्माण और शांति की स्थापना में उनके त्याग, तपस्या और बलिदान का बड़ा योगदान है। उनके एहसानों से मानवता कभी मुक्त नहीं हो सकती । उन गणमान्य एवं महान विभूतियों में हज़रत मोहम्मद सल्ल० का स्थान अग्रणी है। उनकी विश्व-बन्धुत्व, समता, समानता और शान्ति एवं भाईचारा के सन्देशों ने इन्सानों के दिलों को प्रकाशमान किया और समस्त मानव जाति से प्रेम और उनकी सेवा तथा मानवीय श्रेष्ठता पर सबसे अधिक बल दिया परन्तु यह भी एक कटु सत्य है कि उनके असीम योगदान और सहयोग को नज़र अन्दाज़ किया जाता रहा है। मैंने इस लघु पुस्तिका में जहाँ एक ओर समस्त मानवीय धर्मों की मानवता और नैतिकता सम्बन्धी शिक्षाओं को संकलित किया है वहीं दूसरी ओर इस्लाम धर्म के मूल ग्रंथ 'क़ुरआन' की अमृत वाणी और मानवता उपकारक हज़रत मोहम्मद सल्ल० के मधुर सन्देशों और उनके जीवन सिद्धान्तों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

इस्लाम किसी भी ईश दूत या महापुरुषों का निरादर करने का कदापि समर्थक

नहीं बल्कि वह सबके सम्मान, प्रतिष्ठा और मर्यादा का रक्षक है और वह किसी भी ईशदूत के अपमान की अनुमति नहीं देता। इसीलिये मुसलमानों ने अपनी तमाम चारित्रिक और व्यवहारिक त्रुटियों के बावजूद कभी भी किसी दूसरे धर्मों के महापुरुषों का न तो निरादर किया और न हीं उन पर कोई दोषारापेण किया जबकि हज़रत मोहम्मद सल्ल० के विरुद्ध अन्य धर्मों के मानने वालों ने न जाने कितनी निराधार आपत्तियाँ और आलोचनाएँ कीं उन्हें निन्दा का विषय बनाने का प्रयास किया। साथ ही मानव जीवन एवं सभ्य समाज के प्रति उनके महान एवं अविस्मरणीय योगदान को समाज से छिपाये रखने की कोशिश भी की।

मैंने इस संकलित लघु पुस्तिका में यह दर्शाने की कोशिश की है आप सल्ल० की पावन शिक्षाएँ कितनी सकारात्मक हैं और आज के परिवेश में कितनी सार्थक एवं प्रासंगिक हैं।

अन्त में, मैं विश्व विख्यात साहित्यकार डा० असग़र वजाहत जी, साहित्य भूषण श्री धनन्जय अवस्थी जी, साहित्यविद् पूर्व प्रधानाचार्य महर्षि विद्या मन्दिर, श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी जी तथा प्रख्यात कवि श्री शिवशरण सिंह चौहान ''अंशुमाली'' जी का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तिका की रचना हेतु मुझे प्रोत्साहित किया और इस पर अपने अमूल्य विचार भी प्रकट किये।

साथ ही मैं प्रसिद्ध कवि ज़फ़र इक़बाल, क़मर सिद्दीकी, कहानीकार डा० जमाल अहमद, मु० अय्यूब एडवोकेट, मणिभूषण एडवोकेट, अ० रहमान, मसरूर अहमद फ़ारूक़ी, इरशाद हुसैन, नायब शहर क़ाज़ी डा० हबीबुल इस्लाम, राकर राव तिवारी, शक़ील सिद्दीकी, अब्दुल वहीद, कफ़ील अहमद, बारी खान, मुहीउद्दीन एडवोकेट, समदानी फ़ारूक़ी, मु० रिज़वान, हसीब अख़्तर, अबू ज़र तथा समस्त मेरे सुहृदय मित्रों का पुस्तक रचना में प्रोत्साहन एवं अप्रतिम सहयोग के लिये अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

मैं अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल रहा और इसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है, इस सम्बन्ध में विद्वानों एवं समीक्षकों के अमूल्य विचारों एवं प्रतिक्रियाओं का सदैव स्वागत रहेगा।

उनका जो फ़र्ज़ है वह अहले सियासत जानें ।
मेरा पैग़ाम मुहब्बत है, जहाँ तक पहुँचे ।।

डॉ० रफ़ीक़ अहमद
पी-एच०डी०, अंग्रेज़ी

मानवता का सन्देश

सारी प्रशंसाएं और वन्दना उस महान शक्तिशाली ईश्वर के लिए है, जो सम्पूर्ण जगत का जन्मदाता एवं पालनहार है तथा दयालु और कृपाशील है, वे सभी ईशदूत, सन्देष्टा एवं सत्पुरुष उसकी दया और असीम कृपा के पात्र हैं, जो प्रत्येक काल एवं देश में ईश्वर की ओर से आदमी को मानवता का सन्देश देने तथा सच्चे रास्ते पर चलाने हेतु आते रहे हैं ।

दोस्तो ! आम हालात में जब जीवन सरिता शान्तिपूर्वक बह रही हो, तो प्रत्येक व्यक्ति एक प्रकार के सुख एवं शान्ति का अनुभव करता है, क्योंकि भूतल में छिपी हुई गन्दगी और मलतत्व उसकी आँखों से ओझल रहते हैं। ऊपर का साफ़ एवं स्वच्छ जल नीचे बैठी हुई गन्दगियों को जानने का अवसर नहीं देता, परन्तु जब नदी में तूफान उठता है, तो उथल-पुथल के कारण नीचे की गन्दगियाँ उभर कर धरातल पर बहने लग जाती हैं। उस समय अन्धों के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति अपनी आँखों से उनका अवलोकन कर सकता है कि इस समुद्र में क्या-क्या बह रहा है । यही वह समय होता है कि मानव उस उद्गम का पता लगाये जहाँ से गन्दगियाँ आ रही हैं। इनका स्रोत क्या है ? और उस स्रोत को बन्द करने का उपाय सोचे । यदि इस असाधारण अवस्था में भी वह चैन से बैठा रहे, सुख का अनुभव करता रहे, खाओ, पियो और मौज उड़ाओ का जीवन व्यतीत करता रहे, तो समझ लेना चाहिए कि वह मानव के रूप में दानव है, उसको मानव जाति से कोई प्रेम नहीं है, उसे मानवता से कोई लगाव नहीं है वह तो एक पशु की तरह जीवन व्यतीत कर रहा है ।

दोस्तो ! आज जिस युग में हम आप जीवन व्यतीत कर रहे हैं, इन्ही विषममलतत्व उभर कर सामने आ गए हैं । राष्ट्रों तथा जातियों के बीच घोर संघर्ष है। अधिकतर राष्ट्र घृणित अवगुणों का प्रदर्शन कर रहे हैं। अन्याय, क्रूरता, निर्दयता, अत्याचार, झूठ, छलकपट, मिथ्या, भ्रष्टाचार, निर्लज्जता, वचन-भंग,

कामवासना, परिस्थितियों का युग है । इस समय जीवन-सरिता चढ़ाव पर है। सारे मलतत्व उभर कर सामने आ गए हैं । राष्ट्रों तथा जातियों के बीच घोर संघर्ष है। अधिकतर राष्ट्र घृणित अवगुणों का प्रदर्शन कर रहे हैं। अन्याय, क्रूरता, निर्दयता, अत्याचार, झूठ, छलकपट, मिथ्या, भ्रष्टाचार, निर्लज्जता, वचन-भंग, कामवासना, बलात्कार और ऐसे ही अपराध आज मात्र व्यक्तिगत अपराध नहीं रहे बल्कि राष्ट्रीय आचरण एवं नीति का रूप धारण कर रहे हैं । सम्पूर्ण राष्ट्र नफ़रत की ज्वाला में जल रहा है। मानव, दानव बन चुका है। मात्र धन के लिए पुत्र अपने पिता का, पुत्री अपनी माता का और भाई अपनी बहन का अपमान कर रहे हैं। प्रत्येक वर्ष हज़ारों नव-विवाहित युवतियों को दहेज के नाम पर अग्नि की भेंट कर दिया जाता है। प्रत्येक वर्ष हज़ारों युवतियों की इज़्ज़त लूट ली जाती है। बिहार में एक प्राईवेट संस्था द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिवर्ष सैकड़ों नवजात लड़कियां जन्म लेते ही मौत की नींद सुला दी जाती हैं। ऐसे वीभत्स रूप में शिशु-हत्या की भले ही देश का कथित समाज निन्दा करें, परन्तु यह शिक्षित व सभ्य वर्ग भी दूसरे रूप से उसमे लिप्त है । भ्रूण परीक्षण के आधुनिक उपकरणों द्वारा गर्भ में पल रहे बच्चे के बारे में मालूम करके उसको जन्म से पूर्व ही मार डालना निश्चित रूप से उतना ही भयानक अपराध है । वास्तव में अज्ञानता हर युग में विभन्न रूपों में सामने आती है । इस प्रकार की घटनाएं इस युग की अनूठी नहीं है । हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पूर्व का अरब भी इस घिनौने एवं जघन्य अपराध का इतिहास रखता था। यहाँ यह विशिष्ट परिस्थितियों में दहेज का लालच तथा नारी को मूल्यहीन समझने की प्रवृत्ति इसका कारण है ।

आज मानव जाति के अभूतपूर्व प्रगति कर लेने के बावजूद चारों ओर अशान्ति, अव्यवस्था और अनैतिकता का साम्राज्य है। एक समाज दूसरे समाज से लड़ रहा है, एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों को संदिग्ध दृष्टि से देख रहें हैं । आज के इस कथित आधुनिक युग में मानव ने अपनी मानवता खो दी है । न तो इसके हृदय में मानव के प्रति प्रेम है, न ही स्नेह और न ही सहानुभूति, न ही सहयोग और न ही सहनशीलता, बल्कि वह पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, ग्लानि के

भयानक जाल में फंसा हुआ है। न उसे अपने कर्तव्य का ज्ञान है, न ही अपने लक्ष्य का, न उसे अपनी अवनति पर खेद है, न दुष्कर्म पर आत्म-ग्लानि । आज वह अपनी प्रगति से भी असन्तुष्ट है । सहयोग और न ही सहनशीलता, बल्कि वह पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, ग्लानि के भयानक जाल में फंसा हुआ है। न उसे अपने कर्तव्य का ज्ञान है, न ही अपने लक्ष्य का, न उसे अपनी अवनति पर खेद है, न दुष्कर्म पर आत्म-ग्लानि । आज वह अपनी प्रगति से भी असन्तुष्ट है ।

दोस्तो ! यदि हम अग्नि के निकट जाएँ और गर्मी की अनुभूति न हो, बर्फ़ के पास जायें और सर्दी का अनुभव न करें, तो इसका अर्थ है कि हमारे शरीर में आत्मा नाम की कोई चीज़ नहीं है। हमारा शरीर तो मौजूद है, परन्तु आत्मा निकल चुकी है । डार्विन ने तो इन्सान को मात्र बन्दर की ही सन्तान कहा था, मगर आज वह भेड़िया और चीते से भी अधिक ख़ूनी और हिंसक बन चुका है । मानव की इस पशुता एवं दानवता पर कैसे रोक लगाई जाए, उसका निवारण कैसे किया जाए, कभी हमने एक क्षण के लिए भी इन भयानक परिस्थियों पर विचार किया कि इस अमानवीय प्रवृत्ति का कारण क्या है ।

बन्धुवर ! इसका मात्र एक कारण है वह कारण यह है कि मानव भौतिकवादी हो गया है । उसका धर्म से तनिक भी सम्बंध नहीं रहा । वह अपने पालनहार को भूल चुका है । उसका हृदय सदैव सांसारिक भोग विलास में डूबा रहता है । दोस्तो ! मानवता न अपने आप जन्म लेती है और न ही अपने आप मरा करती है । मानवता का तो एक स्रोत है जिससे मानवता जन्म लेती है और जब तक उस स्रोत से मानवता का सम्बन्ध बना रहता है वह फलती-फूलती रहती है और जब उस स्रोत से उसका सम्बंध टूट जाता है, तो मानवता भी दम तोड़ देती है। वह स्रोत क्या है ? धार्मिक विश्वास ही मानवता का स्रोत है और भौतिकवादी प्रवृत्ति दानवता का ।

धार्मिक विश्वास यह है कि इस सृष्टि का एक जन्मदाता एवं पालनहार है और यह विश्वास है कि ईश्वर मानव जीवन के पथ प्रदर्शन हेतु प्रत्येक जाति एवं देश में अपना सन्देष्टा भेजता रहा है। उन्हीं के बताए हुए रास्ते पर चलकर मानव

सफल जीवन व्यतीत कर सकता है । तीसरा विश्वास यह है कि इस जीवन के पश्चात एक दूसरा जीवन भी है, जहाँ ईश्वर पूर्ण जीवन के क्रिया कलापों का हिसाब लेगा और कर्मों के आधार पर पुरस्कृत एवं दण्डित करेगा । यही विश्वास ही मानवता का आधार है। इसी विश्वास से ही मानवता पैदा हो सकती है। कर्मफल पर विश्वास, परलोक पर विश्वास व्यक्ति के अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा करता है और इसी एहसास के अनुसार जो जीवन होगा वही मानवता का जीवन होगा। वह उचित एवं अनुचित का ख़्याल रखेगा । न्याय एवं अन्याय का ख़्याल रखेगा। ईमानदारी एवं बेईमानी का ख़्याल रखेगा वह रिश्वत लेते हुए, ग़बन करते हुए, किसी का माल हड़पते हुए तथा अशान्ति एवं फ़साद फैलाते हुए डरेगा । वह जुल्म एवं अत्याचार करते हुए डरेगा। उसका जीवन 'ख़ुदा रुख़ी' (ईश्वरयुक्त) होगा 'खुद रुखी' (स्वपोषी) नहीं होगा । वह अपने आपको ईश्वर के आदेशों के समक्ष बिछा देगा । इसके विपरीत जब एक व्यक्ति का यह विश्वास हो जाए कि कोई ईश्वर नहीं है, कोई ईशदूत पथ प्रदर्शन हेतु नहीं आया, इस जीवन के बाद और कोई जीवन नहीं है, जहाँ कर्मानुसार फल मिलेगा। खाओ, पियो और मौज उड़ाओ यही जीवन का लक्ष्य है, जो कि भौतिकवादी विचार धारा की देन है। यह सिद्धान्त या विश्वास मानव को दानव क्यों न बना दे। वह क्यों न पशु बन जाएगा। वह क्यों उचित एवं अनुचित को मानेगा। वह अपना लक्ष्य अत्याचार से, बेईमानी से, रिश्वत से, ग़बन से, अन्याय से क्यों न पूरा करेगा। कौन है, जो उसकी बुराईयों को रोक दे । आज सारे संसार में भौतिकवाद का बोलबाला है और इसी भौतिकवाद के नतीजे में पाशविकता जोर पकड़ती जा रही है । आज का युग, ऐसा प्रतीत होता है कि असत्य का युग है। हर जगह असत्य विराजमान है इसका कारण धार्मिक अज्ञानता और धर्म की प्रभावहीनता है। धर्म ही सिखाता है कि न्याय क्या है और अन्याय क्या है, विहित क्या और वर्जित क्या है। आज धर्म सत्ताहीन है और भौतिकवाद सत्तावान है। दोस्तों ! कानून की किताबें मानव को पूर्ण रूप से बुराई से नहीं रोक सकतीं। बुराई तभी रुक सकती है, जब मानव की सोच बदल जाए । उसके अन्दर ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा हो जाए । उसके जीवन का उद्देश्य बदल जाए ।

इस संसार में उसका क्या स्थान है, यह मालूम हो जाए और यह सब तभी सम्भव है जब उसे सत्य धर्म का ज्ञान हो जाए।

भाईयो ! जब तक मानव भौतिकवाद की अपेक्षा ईश्वरवाद को न अपनाएगा, मानवता ज़िन्दा नहीं हो सकती।

इन्सानियत की दुनिया तामीर करने वालो।
यह भी ख़बर है तुमको, इन्सान मर चुका है ।।

जो चीज़ अपने जीवन-स्रोत से अलग हो जाए वह जीवित नहीं रह सकती। यदि उसको ज़िन्दा करना है, तो उसको अपने जीवन स्रोत से पुनः जोड़ना होगा। भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध विद्धान मौलाना अली मियाँ ने कितनी उचित बात कही है, वह कहते हैं कि "इन्सान एक जंगल है, जिसमें हर प्रकार के शेर-चीते और तेन्दुएं मौजूद हैं, यह न समझिएगा कि यह उसके बाहर की दुनिया में मौजूद हैं, बल्कि वास्तव में यह इन्सान के अन्दर मौजूद हैं और बाहर इनका ज़हूर (प्रकटीकरण) है। इन्सान के अन्दर के शेर और तेन्दुएं, इन्सान के अन्दर के चीते और भेड़िए, इन्सान के अन्दर के कुत्ते और सुअरें, बाहर के कुत्तों और सुअरों से कहीं ज़्यादा खूंख़ार और कहीं ज़्यादा इन्सान के ख़ून के प्यासे हैं और उनके अन्दर इनसे कहीं ज़्यादा पाशविकता है। ये इन्सान के अन्दर के सांप-बिच्छू जब से बाहर निकल आये तब से दुनिया बर्बाद हुई है। बाहर के सांप-बिच्छुओं ने दुनिया को कभी तंग नहीं किया। विश्व-युद्ध के नाम पर जो लड़ाईयां लड़ी गई, किसने किसके विरूद्ध लड़ी? ख़ुदा के लिए बताओं कि सांपो और बिच्छुओं की लड़ाई थी या इन्सान की इन्सान से लड़ाई थी।"

दोस्तो ! मेरे कहने का आशय यह है कि धर्म ही मानवता की शिक्षा दे सकता है। संसार के प्रत्येक धर्म एवं जीवन सिद्धान्तों में दूसरी बातों को लेकर तो मतभेद हो सकता है, परन्तु मानवता एवं नैतिकता के सम्बंध में किसी प्रकार का कोई मतभेद नहीं है। प्रत्येक धर्म में इस बात का उपदेश मिलता है कि मानव को नैतिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए। नैतिकता या मानवता समस्त वर्गों की अमूल्य पूंजी है। ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, अहंकार और स्वार्थ जैसे भयानक रोगों से

पाक होना और सत्यवादिता, सदाचारिता, सत्यनिष्ठा और शालीनता जैसे गुणों से परिपूर्ण होना, छोटों से प्रेम एवं स्नेह तथा बड़ों का आदर करना, निर्बलों को सहारा देना, अनाथों एवं विधवाओं की मदद करना, गरीबों और मुहताजों के काम आना, लोगों के अधिकारों को पूरा करना, अत्याचारियों को अत्याचार एवं अन्याय से रोकना एवं पीड़ितों का साथ देना, ये वे श्रेष्ठतम नैतिक मूल्य हैं जिनके बारे में धर्मों के बीच कोई मतभेद नहीं है, ये समस्त धर्मों की शिक्षाओं के प्रमुख अंश हैं। इन शिक्षाओं के बिना धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

भारतवर्ष का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद हैं। यजुर्वेद में है- "हे परमात्मा मेरी दृष्टि इस प्रकार कीजिए जिससे सब प्राणी मुझे मित्र दृष्टि से देखें और हम सब प्रार्थी परस्पर एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखें ।

मनुस्मृति में हिन्दू धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं - धृति (चित्त स्थिरता), क्षमा, दम, अस्तेय (चोरी का त्याग) शौच (पवित्रता), इन्द्रिय-निग्रह, धी (बुद्धि), विद्या, सत्य, अक्रोध, यह सभी आचरण मनुष्यों के परमधर्म हैं, जिनके पालन से ईश्वर प्रसन्न होता है, और समस्त मानवता शान्ति एवं कल्याण का अनुभव करती है ।

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध जी ने कहा है- "जो मनुष्य अपने सुख की इच्छा करता है और सुख की इच्छा करने वाले दूसरे प्राणियों को सताता है, वह मरकर कभी सुख नहीं पाता ।" बुद्ध ने कहा, हिंसा, चोरी, दुराचार, असत्य बोलना, चुग़ली, कठोर वचन, लालच, प्रतिहिंसा, झूठी धारणा अकुशल है । धन, काम आदि की तृष्णा से मनुष्य दुखी होता है अतः तृष्णा का क्षय ही कल्याणकारी है।

जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी जी ने अपने अनुयायियों को पाँच बातों की शिक्षा दी थी, हमेशा सच बोलो, लालच मत करो, चोरी न करो, किसी को मत सताओ, अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखो ।

✪ यदि यह लोग विमुख हो जायें तो हे नबी हमने तुमको उन पर निरीक्षक बना कर तो नहीं भेजा है। तुम पर तो केवल बात पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है ।

(सूरह शूरा आयत-48)

गुरूनानक जी ने समस्त भेद-भाव, ऊँच-नीच एवं दुराग्रहों पर कुठाराघात किया । उन्होंने कहा है मनुष्य तू जिह्वा, बातचीत, मन, काम और मुंह के झूठ बोलते रहते तू सच्चा, शुचिपवित्र साफ-सुथरा क्यों हो सकता है? मोह, माया, कपट, अहंकार, झूठ इत्यादि सभी मन से दूर कर डाल ।

हज़रत ईसा मसीह ने एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा था कि तुम अपने पड़ोसियों से मोहब्बत करो, जो तुम्हें गाली दे उन्हें तुम दुआएं दो, जो तुमसे नफ़रत करे उनके साथ नेकी करो जो तुम पर इल्ज़ाम (दोषारोपण) लगाए उनके लिए भी दुआ मांगो । हज़रत ईसा सामाजिक समानताओं और अन्धविश्वासों को दूर कर सरल एवं सुबोध धर्म का प्रचार करना चाहते थे । क्षमा को विशेष महत्व देते हुये कहते हैं ''मानवों को एक दूसरे दुर्गुणों और ग़ल्तियों आदि को क्षमा करना सीखना चाहिये । ईसा मसीह के अनुसार, जो धर्म जीवन में परिवर्तन न ला सके, उसे उदात्त एवं निर्मल न बना सके, अन्तर चेतना को सुभाषित करके मनुष्य की आस्था और उसके विश्वास को सुदृढ़ न कर सके, वह धर्म नहीं है ।

इस प्रकार उपरोक्त सभी धर्मों में मानवता की प्रवृत्ति पाई जाती है। इन सभी धर्मों ने नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं अध्यात्मिक मूल्यों पर ज़ोर देते हुये मानवीय सम्बंधों की सरलता, निश्छलता एवं मधुरता को मानव के कल्याण एवं उसकी पूर्णता के लिये आवश्यक बताया है ।

दोस्तो ! इसी प्रकार इस्लाम धर्म ने भी मानवता एवं नैतिकता की शिक्षा दी। मानवता एवं नैतिकता का इतना उच्च स्थान इस्लाम में है कि उसके आगे उच्चता की कोई सीमा नहीं है। इस्लाम की शिक्षा के दो उद्गम है एक ईश्वरीय ग्रंथ क़ुरआन दूसरा हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पवित्र शिक्षाएं, जो आप सल्ल० ने अपनी ओर से दी हैं। मैं सर्वप्रथम क़ुरआन की शिक्षा प्रस्तुत करता हूँ -

✪ अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे न माने ।
(सूरह कहफ़ आयत-29)

✪ धर्म के विषय में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं है । (सूरह बकरा आयत-256)

✪ इससे मालूम हुआ कि धर्म के बारे में ज़ोर-ज़बरदस्ती से काम लेना सरासर नादानी और अज्ञानता है और किसी व्यक्ति को किसी धर्म के मानने पर विवश नहीं किया जा सकता । और यदि किसी देश में इस्लामी राज्य स्थापित हो तो उसका यह कर्तव्य है कि वह इस्लाम को न मानने वालों को भी देश का सम्मानजनक नागरिक स्वीकार करे। उन्हें सारे अधिकार दिये जायें, उनकी जान-माल और पूजा स्थलों की सुरक्षा का प्रबन्ध भी हो।

ऐ नबी, अपने प्रभु की मार्ग की ओर बुलाओ तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ, और उन लोगों से वार्तालाप करो ऐसे ढंग से जो उत्तम हो ।

(सूरह नह्ल आयत 125)

यानी सत्य मार्ग की ओर लोगों को प्रेम सद्व्यवहार और अच्छी नसीहतों से बुलाओ, न कि ज़बरदस्ती और अत्याचार द्वारा ।

✪ (ऐ नबी) आप स्पष्टरूप से कह दो कि यह सत्य है तुम्हारे प्रभु की ओर से, अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे न माने।

(सूरह कहफ़- आयत 29)

✪ यदि मुशरिकों (बहुदेववादियों) में से कोई शरण मांग कर तुम्हारे पास आना चाहे, तो उसे शरण दे दो यहां तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दो । यह इसलिये करना चाहिये कि इन लोगों को ज्ञान नहीं। (सूरह तौबा आयत-6)

यहां यह नहीं कहा गया कि यदि वह मुसलमान हो जायें तो शरण दो बल्कि कहा कि मूर्तिपूजक होने की दशा में भी शरण मांगने पर शरण दे दो। इससे बढ़कर इस्लाम धर्म की उदारता का क्या प्रमाण हो सकता है ।

✪ जब ईश्वर अपने पैग़म्बर को यह आदेश देता है कि आपका काम केवल सन्देश पहुंचाना है और आप कोई निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गये हैं तो एक साधारण व्यक्ति को भला इस्लाम धर्म किस प्रकार धर्म के कारण ज़ोर-ज़बरदस्ती करने

की अनुमति दे सकता है। सच तो यह है कि इस्लाम में कहीं भी ज़बरदस्ती करने की इजाज़त नहीं दी गयी है।

नेकी यह है कि माल की मुहब्बत के बावजूद ख़र्च करे, रिश्तेदारों पर, यतीमों पर, ग़रीबों, मुसाफ़िरों, भिखारियों पर भी और गुलामों को आज़ाद कराने में भी। (सूरह बक़रा आयत-177)

- नर्मी और क्षमा से काम लो, भले काम का आदेश दो और अज्ञानी लोगों से न उलझो और अगर शैतान की कोई उकसाहठ तुम्हें उकसाये तो अल्लाह की पनाह मांगो। (सूरह आराफ़ : 199— 200)

- भलाई और ईशभक्ति के कामों में एक-दूसरे से सहयोग करो और बुराई एवं अत्याचार के कामों में सहयोग मत करो। अल्लाह से डरो। उसका दण्ड बड़ा कठोर है। (सूरह माइदा आयत- 2)

- और अगर ये आपको छुठलाते हैं, तो कह दीजिये कि मेरा कर्मफल मुझको मिलेगा और तुम्हारा कर्मफल तुमको। तुम मेरे कर्मों के उत्तरदायी नहीं हो और न मैं तुम्हारे कर्मों का उत्तरदायी हूँ।

(सूरह यूनुस आयत- 41)

यानी विरोधियों द्वारा झुठलाये जाने पर भी जब ईश्वर अपने रसूल सल्ल० को विशाल हृदयता एवं सहिष्णुता का व्यवहार करने का आदेश दे रहा है, तो वह धर्म किसी साधारण मुसलमान को धार्मिक विभेद के कारण लड़ाई-झगड़ा करने की आज्ञा कैसे दे सकता है ? धार्मिक भेदभाव के कारण किसी पर अत्याचार करना और ज़ोर-ज़बरदस्ती से काम लेना इस्लाम के अनुसार सरासर अनुचित है।

- लोगो, अपने प्रभु से डरो जिसने तुमको एक जीव से पैदा किया और उसी जीव से उसका जोड़ा बनाया। उन दोनों से बहुत से पुरुष और स्त्री संसार में फैला दिये। (सूरह निसा आयत-1)

यानी इस्लाम इन्सानों के दरम्यान विश्व बन्धुत्व का विचार पेश करता है। इन्सानों को याद दिलाता है कि मानवता की शुरूआत एक पुरुष और एक स्त्री से हुई है। आज दुनिया में जितने भी इन्सान पाये जाते हैं, वे सब एक माता-पिता की संतान हैं। इन सबका सृष्टा एक ही है और सबके सब एक ही तत्व से बने हैं। अतः ऊँच-नीच, छूत-छात एक निराधार चीज़ है।

✪ ''ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो'' (सूरह बक़रा आयत-19)

जहां तक इस्लाम का सम्बंध है, इसमें आतंकवाद की कही कोई गुंजाइश नहीं है। इस्लाम शान्ति का धर्म है और इसी को पसन्द करता है। इस्लाम इन्सानी जान और माल का आदर करना सिखाता है। और अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये आतंक से काम लेने के तरीक़े का प्रबल विरोधी है।

✪ और (ऐ नबी) यदि तेरे प्रभु की इच्छा यह होती (कि धरती में सब ईमान वाले और आज्ञाकारी ही हों) तो धरती के सारे वासी ईमान लाये होते। फिर क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि वह ईमान वाले हो जायें।

✪ और (ऐ ईमान वालो) ये लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें गालियां न दो कहीं ऐसा न हो कि ये शिर्क (बहुदेववाद) में आगे बढ़कर अज्ञान के कारण ईश्वर को गाली देने लगें। (सूरह अनआम आयत-107)

✪ जिसने किसी व्यक्ति को किसी ख़ून का बदला लेने या ज़मीन के फ़साद फैलाने के सिवा किसी और कारण से कत्ल किया, तो मानो उसने समस्त मनुष्यों की हत्या कर डाली और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इन्सानों को जीवन दान दिया। (सूरह माइदा आयत - 32)

✪ हे नबी, बुराई को उस ढंग से दूर करो जो उत्तम हो। जो कुछ बातें वे तुम पर बनाते हैं, उन्हें हम भलीभांति जानते हैं। (सूरह मोमिनून आयत-96)

दोस्तो ! पवित्र क़ुरआन में जगह-जगह नेकी करने, नेक सुलूक करने ईश्वर की सभी प्राणियों से भलाई से पेश आने और पड़ोसियों से अच्छे

व्यवहार करने, विशाल हृदयता से काम लेने, क्षमा करने और हर प्रकार की उदारता बरतने के आदेश मौजूद हैं।

- ''ऐ ईमान वालो ! अल्लाह के लिये न्याय पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले बनो । इन्साफ़ की गवाही देते हुये और ऐसा हरगिज़ न हो कि किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हे उस बात पर उभार दे कि तुम न्याय करना छोड़ दो । न्याय करो, यही धर्म परायणता के अनुकूल बात है।

(सूरह माइदा आयत - 8)

- इस्लाम केवल उस न्याय की बात नहीं करता जो न्यायालय में मिलता है, बल्कि वह हर जगह, हर व्यक्ति के लिये न्याय का प्रबन्ध करता है। राजनैतिक, आर्थिक, और पारिवारिक जीवन में न्याय स्थापित करता है। अल्लाह ने जो कुछ तुझे दिया है, उसे आख़िरत के घर की प्राप्ति का साधन बना और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल । और लोगों के साथ अच्छा व्यवहार कर, जैसे अल्लाह ने तेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है । धरती में बिगाड़ न पैदा कर, बिगाड़ पैदा करने वालों को अल्लाह पसन्द नहीं करता ।

(सूरह क़सस आयत-77)

- ईश्वर की उपासना करो, और किसी चीज़ को उसका समकक्ष न ठहराओ और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता के साथ, सम्बन्धियों, अनाथों और ग़रीबों के साथ, निकट के पड़ोसियों के साथ, और अजनबी पड़ोसियों के साथ, और साथ रहने वाले साथी के साथ और यात्रियों के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे अधीन हों ।

''अल्लाह ऐसे व्यक्ति को नहीं चाहता जो इतराता और डींगे मारता हो''

(सूरह निसा आयत-36)

- ईश्वर तुमको आज्ञा देता है न्याय का, सदाचार का और निकट सम्बन्धियों को आर्थिक सहायता देने का और मना करता है निर्लज्जता से, दुष्कर्मों से,

तथा अतिकुकर्म करने से, वह तुम्हें इन बातों का उपदेश देता है, ताकि तुम इनको याद रखो। (सूरह नहल आयत - 10)

- स्वर्ग उन लोगों के लिए है, जो सुख और दुख दोनों ही दशाओं में परमार्थ के कामों में धन ख़र्च करते हैं और क्रोध को पी जाते हैं, लोगों के दोष को क्षमा कर देते है। और अल्लाह उत्तमकारों से प्रेम करता है।

  (सूरह अल-इमरान आयत-134)

- किसी के प्रति अत्याधिक दुर्भावना से बचो क्योंकि अनेक दुर्भावनाएं पाप होती हैं और दूसरे की गुप्त बातों की जिज्ञासा न किया करो और न एक दूसरे के पीठ पीछे निन्दा किया करो। (सूरह हुजरात आयत- 12)

- वायदे को पूरा करो निःसन्देह वायदे के बारे में प्रश्न होगा।

  (बनी इस्राइल आयत-34)

- तुम बुराई का जवाब भलाई से दो फिर तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिसके बीच बैर था वह ऐसा हो जायेगा मानो वह कोई आत्मीय मित्र हो।

  (सूरह हा मीम सज्दा आयत -34)

★ ★ ★

अब आइए हज़रत मुहम्मद सल्ल० की शिक्षाओं तथा उनके जीवन सिद्धान्तों का अवलोकन करें -

<u>हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया :</u>

- ईश्वर उस व्यक्ति पर दया नहीं करता जो इन्सानों पर दया न करे। (बुख़ारी शरीफ़)
- तुम कदापि ईमान वाले नहीं होगे जब तक कि तुम दया न करो। लोगों ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल हम में से हर व्यक्ति दया करता है, आपने फ़रमाया इससे अभिप्राय वह दया और सहानुभूति नहीं है, जो तुम में से कोई व्यक्ति अपने निकटतम व्यक्ति के साथ करता है। यहाँ तो उस आम दया और कृपा का उल्लेख है, जो समस्त इन्सानों के साथ होती है। (तबरानी)
- जो व्यक्ति नम्रता ग्रहण करने से वंचित रहा, वह सारी भलाइयों से वंचित रहा। (मुस्लिम शरीफ़)
- वह व्यक्ति मुसलमान नहीं है, जो स्वयं तो पेट भरकर खा ले और उसके बगल में उसका पड़ोसी भूखा रहे। (मुस्लिम शरीफ़)
- एक व्यक्ति ने मुहम्मद सल्ल० से पूछा कि ऐ ख़ुदा के रसूल एक औरत है, जो बहुत ज़्यादा नमाज़ पढ़ती है और रोज़ा रखती है और दान-पुण्य भी करती है, परन्तु कटु वचनों से अपने पड़ोसियों को सताती भी है। मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया उस औरत में कोई भलाई नहीं है वह नरक में जाने वाली है। एक आदमी ने फिर कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल एक औरत के बारे में बताया जाता है कि वह कम नफ़्ल नमाज़ें पढ़ती है और बहुत कम रोज़े रखती है और पनीर के कुछ टुकड़े ही दान करती है, लेकिन अपनी ज़ुबान से पड़ोसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचाती। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि वह औरत स्वर्ग में जायेगी। (मिशकात शरीफ़)
- तुम में सबसे अच्छे लोग वह हैं जिनका एख़लाक़ तुम में सबसे अच्छा हो। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ ताक़तवर वह व्यक्ति नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पछाड़ दे बल्कि ताक़तवर तो वास्तव में वह है जो ग़ुस्से की हालत में अपने पर क़ाबू रखता है । (बुख़ारी शरीफ़)

✪ जो व्यक्ति इन्सानों के उपकारों का शुक्रिया अदा नहीं करता है वह अल्लाह का शुक्र भी अदा नहीं कर सकेगा । (तिर्मिज़ी शरीफ़)

✪ नरक में सबसे ज़्यादा लोग अपनी ज़बान और गुप्तांग के ग़लत इस्तेमाल की वजह से जायेंगे। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

✪ मुझे तुम में से वह व्यक्ति अधिक प्रिय है जो तुम में सबसे अच्छे स्वभाव वाला हो । (बुख़ारी शरीफ़)

✪ ख़ुदा की क़सम वह व्यक्ति मुसलमान नहीं है, पूछा गया कौन ? आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह व्यक्ति जिसके कष्टदायक कार्यों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ जो कोई मुसलमान शासक अपनी प्रजा में किसी ग़ैर मुस्लिम व्यक्ति का रक्त बहायेगा, वह स्वर्ग के निकट भी नहीं पहुँच सकेगा । (बुख़ारी शरीफ़)

✪ जो मुसलमान किसी ग़ैर मुस्लिम शहरी पर अत्याचार करेगा, उसका हक़ मारेगा या उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डालेगा या उसकी कोई चीज़ ज़बरदस्ती ले लेगा तो मैं ख़ुदा की अदालत में उस मुसलमान के ख़िलाफ़ दायर होने वाले मुकदमे में उस ग़ैर मुस्लिम शहरी का वकील बन कर खड़ा हूँगा। (अबू दाऊद शरीफ़)

✪ ईश्वर के नज़दीक सबसे ज़्यादा बुरा आदमी वह है जो हमेशा लड़ने- झगड़ने वाला हो। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ तुम में भला और श्रेष्ठ वह व्यक्ति है जिससे भलाई की आशा की जाये और जिसकी बुराई से लोग सुरक्षित हों, और तुम में सबसे बुरा वह व्यक्ति है, जिससे भलाई की आशा न की जाये और जिसकी बुराई से लोग सुरक्षित न हों। (तिरमिज़ी शरीफ़)

✪ क़सम है उसकी जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम में से कोई मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक कि ऐसा न हो कि वह अपने दूसरे भाई के लिये वही पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (मुस्लिम शरीफ़)

✪ मुसलमान स्नेह का आगार होता है। (मुस्लिम शरीफ़)

✪ तमाम इंसान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से पैदा किये गये थे। (तिरमिज़ी शरीफ़)

✪ क़ियामत (महाप्रलय) के दिन जब (कर्म तौला जायगा) कर्म तुला में सद्वृत्ति और सुशीलता से बढ़कर कोई वस्तु भारी न होगी। निस्संदेह ईश्वर अपशब्द बकने वाले को बहुत ही बुरा समझता है" (मुस्लिम शरीफ़)

✪ तुम में से कोई ईमान वाला नहीं होगा जब तक कि वह अपने पड़ोसी के लिए वह कुछ पसन्द न करे, जो वह अपने लिये पसन्द करता है" (मुस्लिम शरीफ़)

✪ आपस में ईर्ष्या न करो, और न आपस में बैर-भाव रखो और न परस्पर एक-दूसरे से सम्बंध विच्छेद करो। अल्लाह के बन्दे और भाई-भाई बनकर रहो। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ जो लोगों पर दया नहीं करता, ख़ुदा भी उस पर दया नहीं करेगा। (तिरमिज़ी शरीफ़)

✪ ईश्वर जिन बन्दों को चाहता है, उनके दिलों में दया पैदा कर देता है। अल्लाह उन्हीं लोगों पर दया करता है, जो दयावान और नम्र स्वभाव वाले होते हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ सम्पूर्ण सृष्टि ख़ुदा का कुटुम्ब है। अतः लोगों में ख़ुदा के निकट सबसे उत्तम वह व्यक्ति है, जो उसके कुटुम्ब के साथ अच्छा व्यवहार करे। (मिशकात शरीफ़)

✪ दया करने वालों पर ख़ुदा दया करता है, तुम धरती वालों पर दया करो, तुम पर आकाश वाला दया करेगा - (तिरमिज़ी शरीफ़)

- ✪ अल्लाह मृदु स्वभाव वाला है वह मृदुता को पसन्द करता है। (मुस्लिम शरीफ़)
- ✪ जिस व्यक्ति के हृदय में तनिक भी अहंकार होगा वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं पा सकेगा। (मुस्लिम शरीफ़)
- ✪ तुम में से जो व्यक्ति किसी बुराई को देखे उसे अपने हाथ से मिटा दे। अगर उसे इसकी सामर्थ्य न हो तो ज़बान ही से सही और अगर इसकी भी शक्ति न हो तो दिल से उसे मिटाने के लिये व्याकुल हो। लेकिन यह सबसे कमज़ोर ईमान है। (मुस्लिम शरीफ़)
- ✪ जो व्यक्ति वह पेड़ काटे जो मैदान में हो जिससे यात्री और पशु छाया प्राप्त करते हों। और यह काटना अकारण और अन्यायपूर्ण हो तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति को सिर के बल नरक में फेंक देगा। (अबूदाऊद)

इससे पता चला कि सार्वजनिक सम्पत्ति को नुक़सान पहुंचाना गुनाह (पाप) का कारण है, क्योंकि यह ख़ुदा की मख़लूक़ (प्राणी) को कष्ट पहुँचाने और उसे जो राहत और आराम पहुँच सकता है उसे समाप्त कर देने के समान है। अल्लाह को यह हर्कत बहुत ना पसन्द है।

- ✪ आप सल्ल० ने एक बार फ़रमाया -

''क़ियामत के दिन अल्लाह कहेगा - ऐ आदम के बेटे (अर्थात इन्सान)! मैं बीमार हुआ, मगर तूने मेरी ख़बर न ली। वह कहेगा कि ऐ पालनहार। मैं आपकी सेवा कैसे करता, आप सम्पूर्ण विश्व के पालनहार हैं ? (आप तो बीमार हो नहीं सकते) ख़ुदा कहेगा कि क्या तुझे नहीं मालूम कि मेरा अमुक बन्दा बीमार हुआ और तूने उसकी देखभाल न की। तुझे क्या मालूम, अगर तू उसकी देखभाल करता, तो मुझे उसके पास पाता।

ऐ आदम के बेटे। मैंने तुझसे खाना मांगा और तूने मुझे खाना न खिलाया। वह कहेगा कि ऐ रब ! आपको कैसे खाना खिलाता, आप तो सम्पूर्ण विश्व के पालनहार है। ख़ुदा कहेगा कि मेरे फ़लॉ बन्दे ने तुझसे खाना मांगा, मगर तूने उसे खाना न दिया क्या तुझे पता नहीं कि अगर तू उसे खाना खिलाता, तो उसे मेरे पास पाता।

ऐ आदम के बेटे ! मैंने तुझसे पानी मांगा, मगर तूने पानी नहीं पिलाया। वह कहेगा कि ऐ रब! मैं कैसे आपको पानी पिलाता, आप तो खुद सारे संसार के पालनहार हैं। वह कहेगा कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे पानी मांगा था, मगर तूने उसे पानी न पिलाया। क्या तुझे मालूम नहीं कि अगर तू उसे पानी पिलाता तो उसे मेरे पास पाता। (मुस्लिम शरीफ़)

ईश्वर तो अपने बन्दों की भूख, प्यास और बीमारी को अपनी भूख, प्यास और तकलीफ़ मानता है, मगर अफ़सोस कि इन्सान, इन्सान का शत्रु बन जाता है काश कि हम अपने अन्दर वह गुण पैदा करें, जो ईश्वर को प्रिय हैं।

✪ आप सल्ल० ने फ़रमाया : एक व्यक्ति सुनसान जंगल से गुज़र रहा था कि उसे बहुत तेज़ प्यास लगी। इसी हालत में उसने एक कुआं देखा तो उतर कर पानी पिया। जब ख़ूब तृप्त होकर बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास की तीव्रता से ज़बान निकाले हुये गीली ज़मीन चाट रहा है। उस व्यक्ति ने सोचा कि जिस प्रकार थोड़ी देर पहले मैं प्यास से तड़प रहा था उसकी प्रकार यह कुत्ता भी तड़प रहा है। वह तुरन्त कुँये में उतरा और अपने चमड़े के मौज़े में पानी भरकर लाया और उस बेज़ुबान पशु को पिलाया। अल्लाह तआला ने इस कर्म के बदले उस व्यक्ति को बख़्श दिया। यह सुनकर आप सल्ल० के साथियों ने पूछा ! क्या पशुओं की सेवा करने में भी पुण्य और सवाब है ? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : प्रत्येक जीवधारी की सेवा में पुण्य और सवाब है। (बुख़ारी शरीफ़)

✪ आप सल्ल० ने फ़रमाया : एक व्यक्ति ने रास्ता चलते हुये, रास्ते में एक काँटेदार झाड़ी देखी, उसने उसे वहाँ से हटा दिया। अल्लाह ने उसके इस काम को पसन्द किया और उसको बख़्श दिया। (बुख़ारी शरीफ़)

★ ★ ★

अब आइये मुहम्मद सल्ल० की जीवन घटनाओं को देखें । जिससे आपको मालूम हो जायेगा कि मुहम्मद सल्ल० सदाचार के प्रतीक थे और आप मुहम्मद सल्ल० की विशाल हृदयता और उदारता अपनी पराकाष्ठा को पहुँची हुई थी ।

- ✪ एक बार एक बद्दू (अरब ग्रामीण) ने मस्जिद में पेशाब कर दिया आपके साथी उसे मारने के लिए दौड़े, परन्तु आपने मना किया और कहा उसे धो डालो । ईश्वर ने तुम्हें आसानी के लिए पैदा किया है कठिनाई के लिए नहीं ।
- ✪ एक बार मुहम्मद सल्ल० के साथियों ने आपसे प्रार्थना की कि अपने शत्रुओं को शाप दे दीजिये आप मुहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया मैं शाप देने के लिए नहीं, अपितु रहमत (दया) बनाकर भेजा गया हूँ।
- ✪ जब आप मुहम्मद सल्ल० ने मक्का पर विजय प्राप्त की और विजेता की तरह मक्का में प्रवेश किया, तो आपके सामने वह शत्रु सर झुकाये खड़े थे। जो तेरह वर्ष तक मक्का में मुहम्मद सल्ल० के ऊपर अत्याचार करते रहे, रास्ते में काँटे बिछाते रहे, राह चलते हुए कूड़ा करकट फेंकते रहे, नमाज़ के दौरान गर्दन में रस्सी डालकर खींचा गया, यहाँ तक कि मक्का से हिजरत (प्रस्थान) कर जाने के बाद भी चैन नहीं लेने दिया। मुहम्मद साहब चाहते तो बदला ले सकते थे, परन्तु उन्होंने सभी लोगों को क्षमा कर दिया।

आपने देखा कि मुहम्मद साहब की शिक्षाएं कैसी थी तथा आपका जीवन चरित्र कैसा था ? वास्तव में मुहम्मद सल्ल० पग-पग पर नम्रता, दयालुता, उदारता, विशाल हृदयता, सहनशीलता, सदाचार, सदव्यवहार तथा क्षमादान के आदर्श एवं प्रतीक थे ।

यही स्थिति आप मुहम्मद सल्ल० के उत्तराधिकारियों की भी थी। आइये एक दृष्टि उनके उत्तराधिकारियों की जीवन शैली पर डालें।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० मुहम्मद सल्ल० के प्रथम उत्तराधिकारी थे। आपने अपने सेनापतियों के नाम यह फ़रमान जारी किया था कि लोगों के साथ

व्यवहार में न्याय से काम लेना, जब विजय प्राप्त हो तो बूढ़ों को कष्ट न देना, स्त्रियों और बालकों की रक्षा करना, फ़लदार वृक्षों को हानि न पहुँचाना, खलिहानों में आग न लगाना प्राचीन भवनों को न ढहाना, उपासना स्थलों और उपासना करने वालों को नुकसान न पहुँचाना। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० इतना सादा जीवन व्यतीत करते थे कि ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनने से पहले आप मुहल्लेवालों की बकरियाँ दुह देते थे। जब आप प्रथम शासक नियुक्त हुए तो एक लड़की बड़े अफ़सोस से कहने लगी अब हमारी बकरियां कौन दुहेगा। हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम मैं दुहूंगा ।

दूसरे उत्तराधिकारी हज़रत उमर रज़ि० थे। एक बार ईसाईयों ने आपको और आपके साथियों को गिरजाघर में नमाज़ पढ़ने की अनुमति दी, परन्तु ख़लीफ़ा उमर ने वहां नमाज़ नहीं पढ़ी इस विचार से कि कहीं भविष्य में इसका प्रमाण देकर मुसलमान गिरजाघर में हस्तक्षेप करके उसको मस्जिद न बना दें । यह घटना उनकी कितनी बड़ी दूरदर्शिता, न्यायप्रियता एवं उदारता की परिचायक है ।

एक बार ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० बीमार हुए । शहद की आवश्यकता हुई, शहद सरकारी भण्डार में मौजूद था, परन्तु आपने वहां से लेने से इंकार कर दिया जब तक कि मस्जिद में जनसाधारण से अनुमति न ले ली ।

एक बार एक ग़ैर मुस्लिम बुढ़िया ने ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत की कि आपके गवर्नर ने मेरी अनुमति के बग़ैर मेरा मकान मस्जिद में शामिल कर लिया है । गवर्नर को बुलाया गया उन्होंने स्वीकार किया, यह बात सच है नमाज़ पढ़ने वालों की संख्या अधिक हो गई थी इसलिए मैंने ऐसा किया था। ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० नाराज़ हुए और उन्हें आदेश दिया कि उस बुढ़िया का मकान वहीं बनाया जाए जहां था, और वहां की किसी भी ज़मीन पर उसकी अनुमति के बग़ैर नहीं ले सकते । ज़बरदस्ती हड़पी हुई ज़मीन पर नमाज़ नहीं हो सकती ।

मिस्र के एक ग़ैर मुस्लिम ने ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० से शिकायत की कि आपके गवर्नर के लड़के ने मेरे लड़के के सर पर बिना किसी कारण कोड़े मारे हैं।

गवर्नर और उनका लड़का बुलाए गये शिकायत सही साबित हुई। ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० ने उस ग़ैर मुस्लिम लड़के को आदेश दिया कि तुम भी गवर्नर के लड़के के सर पर इतने ही कोड़े मारो, भरी सभा में उस ग़ैर-मुस्लिम लड़के ने उस गवर्नर के लड़के को कोड़े मारे । जब वह कोड़ा रखने लगा तब ख़लीफ़ा हज़रत उमर रज़ि० ने कहा कि दो कोड़े गवर्नर को भी मारो । अगर गवर्नर के लड़के को यह घमण्ड न होता कि मेरे पिता गवर्नर हैं, तो तुम्हारे सर पर कोड़े न मारता, परन्तु उस लड़के ने कोड़ा रख दिया ।

जब मुल्क शाम पर हज़रत उमर रज़ि० ने विजय प्राप्त की तो वहां के निवासियों ने आपको आमंत्रित किया । सवारी के लिए ऊँट कम थे और सवार अधिक । यह निर्णय लिया गया कि दो लोग बारी-बारी सवार हों । हज़रत उमर रज़ि० के साथ उनका ग़ुलाम उनके हिस्से में आया कभी उमर रज़ि० ऊँट पर सवार होते, तो उनका नौकर नकेल पकड़ कर चलता कभी उनका नौकर ऊँट पर सवार हो जाता तो हज़रत उमर रज़ि० नकेल पकड़ कर चलते। जब मुल्क शाम में प्रवेश किया तो ऊँट पर सवार होने की बारी उनके गुलाम की थी। उस गुलाम ने बार-बार ख़लीफ़ा उमर से प्रार्थना की कि आप ऊँट पर सवार हो जाये मैं नकेल पकड़कर चलूँगा । परन्तु ख़लीफ़ा उमर ने कहा ऐसा नहीं हो सकता ऊँट पर सवार होने की बारी तुम्हारी है, तुम ऊँट पर सवार हो मैं नकेल पकड़कर चलूँगा ।

दोस्तो ! इस प्रकार के त्याग भाव और जनसेवा का उदाहरण नहीं मिलता । इसीलिये तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने 1937 में जब पहली बार यू०पी० में भारतीयों का मंत्रिमंडल स्थापित हुआ, तो कहा कि हमारे मंत्रियों को ख़लीफ़ा अबू बक्र और ख़लीफ़ा उमर का अनुसरण करना चाहिए और वैसा ही सादा जीवन व्यतीत करते हुए जनसेवा में लगे रहना चाहिये । एक बार एक ग़ुलाम ने आपको कुछ खाने को दिया, बाद में मालूम हुआ कि वह शुद्ध कमाई का न था आपने गले में उँगली डालकर क़ै कर दी और कहा जो शरीर हराम खाने से पलता है, नरक उसका उचित स्थान है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के तीसरे उत्तराधिकारी हज़रत उस्मान रज़ि० थे ।

समस्त इस्लामी प्रशासन उनके अधीन थे । इस महान पद एवं प्रभुत्व के होते हुये भी आपके परलोक और ईश्वर भय का यह हाल था कि एक बार आपने किसी ग़लती पर अपने दास का कान ऐंठ दिया तो परलोक-दण्ड की कल्पना ने आपको इतना विचलित किया कि आपने उससे कहा - तुम मुझसे इसका बदला ले लो और तुम भी मेरा कान ऐंठो । उसने आपके आदेश-पालन में केवल आपके कान को अपने हाथ में ले लिया, आप सल्ल० ने कहा ''यूं नहीं, ज़ोर से ऐंठो । मैंने ज़ोर से ऐंठा था । इस संसार में बदला पूरा हो जाना परलोक के दण्ड से अच्छा है ।

चौथे उत्तराधिकारी हज़रत अली रज़ि० हैं उन्होंने एक शत्रु से मुकाबला किया । आपने उसे पछाड़ दिया, उसने नीचे से हज़रत अली पर थूक दिया। हज़रत अली रज़ि० उसे छोड़कर अलग खड़े हो गये और कहा, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने व्यक्तिगत अपमान के कारण तुम्हें अधिक कष्ट पहुँचा दूँ और ईश्वर के यहाँ दण्ड का भागी होऊँ ।

एक बार हज़रत अली रज़ि० रात के समय दीपक की रोशनी में राज्य का सरकारी कार्य कर रहे थे। दीपक में ज़ैतून का तेल जल रहा था। इतने में उनके एक साथी वहां आ गये। हज़रत अली रज़ि० ने दीपक को बुझा दिया और देर तक अपने साथी से वार्तालाप करते रहे, जब वह साथी जाने लगा तो आपने उस दीपक को पुनः जला दिया। उस साथी ने पूछा जब मैं आपके पास आया तो आपने उस दीपक को बुझा दिया और जब जाने लगा तो आपने उस दीपक को जला दिया । खलीफा ने जवाब दिया इस दीपक में तेल राज्य के खज़ाने का जल रहा था। यह तेल राज्य के कार्यों के लिए तो जलाया जा सकता है, यदि मैं अपने व्यक्तिगत कार्य में सरकारी तेल जलाऊँगा तो कल ईश्वर के यहाँ क्या जवाब दूंगा ।

हज़रत अली रज़ि० अपने शासनकाल में बाज़ारों में जाते, वहां जो लोग रास्ता भूल जाते उन्हें रास्ता बताते, बोझ ढोने वाले का बोझ उठा देते, किसी के जूते का तल्ला गिर जाता तो उठा कर दे देते और क़ुरआन की यह आयत पढ़ते - ''हमने परलोक का घर उन लोगों के लिये बनाया है जो धरती पर उदण्डता और उपद्रव नहीं फैलाना चाहते और परलोक के कल्याण और प्रसन्नता केवल ईश्वर से डरने वाले संयमी लोगों के लिये है ।''

एक बार आप रज़ि० ने फ़रमाया कि जो ग़ैर मुस्लिम हमारी प्रजा है और जिसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी हमने स्वीकार की है, कानून के अनुसार उनका ख़ून हमारे ख़ून के बराबर और उनका धर्म हमारे धर्म के समान है।

बन्धुवर ! ये हैं इस्लाम की वे पवित्र शिक्षायें और पैग़म्बरे इस्लाम का जीवन सिद्धान्त जिसका प्रत्येक व्यक्ति अनुसरण कर सकता है, परन्तु बड़े खेद की बात है कि इस्लाम की यह पवित्र शिक्षायें जो मानवता, सहिष्णुता, सहानुभूति, सहनशीलता एवं उदारता पर आधारित हैं, हमारे जीवन का अंश नहीं हैं पुनः यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देशवासियों ने इस्लाम को क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्ल० की पवित्र जीवनी से समझने के बजाय मुसलमानों के कार्यों से इस्लाम को समझा । यदि किसी कथित मुसलमान ने किसी ग़ैर मुस्लिम की हत्या कर दिया तो उन्होंने समझा कि यह भी इस्लाम की शिक्षा होगी, परन्तु ऐसा नहीं है। क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि जिसने किसी को क़त्ल किया मानो उसने समस्त मानव जाति को क़त्ल कर दिया। इस्लाम अपने अनुयायियों को समस्त मानव जाति के प्रति सहानुभूति रखने पर बल देता है (चाहे वह किसी भी धर्म का मानने वाला हो) । हमारे देशवासियों को इस्लाम के प्रति ऐसी दुर्भावना रखने का एक कारण यह भी है कि उन्होंने मुस्लिम शासकों के क्रिया कलापों को ही इस्लामी शिक्षा का परिणाम समझा। हालांकि उनके कारनामे सारे के सारे इस्लाम के अनुसार नहीं थे। हमारे देशवासियों ने मुहम्मद गौरी और महमूद ग़ज़नवी को इस्लाम का प्रतिनिधि समझा । यह लोग कदापि इस्लाम के प्रतिनिधि नहीं थे और ना ही किसी मुस्लिम विद्वान ने इन लोगों के कारनामों को उचित ठहराया और न ही इनका इस्लाम के प्रतिनिधि की हैसियत से परिचय कराया । जब महमूद गज़नवी के बेटे ने क़ाज़ी अबुल हसन को (जो एक धार्मिक व्यक्ति थे) सोमनाथ का सोना उपहार में भेजा तो उन्होंने यह कहते हुए ठुकरा दिया कि महमूद की यह जंग हज़रत मुहम्मद सल्ल० के शिक्षाओं के विरूद्ध है।

बन्धुवर ! मुसलमान शासकों के पूर्व यहां की जनता इस्लाम से भली भांति परिचित नहीं थी। मुस्लिम हमलावरों को ही यहां के लोगों ने इस्लाम का प्रतिनिधि

समझा, चूंकि किसी भी वस्तु का नया-नया परिचय बड़ा महत्व रखता है । यदि प्रारम्भिक परिचय सही नहीं हुआ तो अन्त तक मस्तिष्क में वही परिचय छाया रहता है, इसलिए शताब्दियाँ गुज़र गयी, परन्तु आज भी इस्लाम के प्रति लोगों की अवधारणा सही नहीं है। वह आज भी इस्लाम को तलवार का धर्म समझते हैं, क्योंकि इन मुस्लिम शासकों ने पृथ्वी पर ईश्वर की बादशाहत स्थापित करने के बजाय अपनी बादशाहत स्थापित की जो सरासर ईश्वर के खिलाफ़ बग़ावत है ।

इस्लाम चाहता है कि इंसान पर से इंसान की हुकूमत समाप्त हो जाये क्योंकि इसी से शोषण एवं अत्याचार के दरवाज़े खुलते हैं, मगर इन शासकों ने इन्सान पर अपने ख़ुदाई क़ायम की । इस्लाम की शिक्षा के अनुसार इंसान का सर ईश्वर के अतिरिक्त किसी के आगे नहीं झुकना चाहिये, परन्तु इन मुस्लिम शासकों ने इंसान का सर अपने समक्ष झुकाने पर विवश किया जो इस्लाम के विरुद्ध है । जैसा कि एक और महान इस्लामी विद्वान हज़रत शाह वली उल्लाह रह० कहते हैं- ''मैं हाकिमों से कहता हूँ कि तुम्हें ईश्वर का भय नहीं तुम नश्वर सुख और स्वार्थ की चाह में डूब गए और प्रजा को छोड़ दिया कि एक दूसरे का खा जाएं । खुले आम शराब पी जा रही है और तुम नहीं रोकते । व्यभिचार, शराबख़ोरी और जुऐ के अड्डे खुले रूप से स्थापित हो गये हैं और हम उनकी रोकथाम नहीं करते । इस विशाल देश में दीर्घकाल से शरीअत के अनुसार कोई सज़ा नहीं दी गयी । जिसको तुम कमज़ोर पाते हो खा जाते हो ओर जिसे शक्तिशाली पाते हो उसे छोड़ देते हो । खानों का स्वाद, स्त्रियों का हाव भाव, कपड़ों और मकानों की सुन्दरता । बस ये चीज़ें हैं, जिनमें तुम डूब गये हो, कभी ईश्वर का ख्याल तुम्हें नहीं आता ।''

महमूद ग़ज़नवी के सम्बंध में प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो० इरफ़ान हबीब लिखते हैं - ''ग़ज़नवी सेना के हाथों मंदिरों का जो भयानक विनाश हुआ, उसे कोई ईमानदार इतिहासकार छिपाने की कोशिश नहीं करेगा और न ही कोई मुसलमान, जो अपने मज़हब से परिचित है उसे उचित ठहराएगा । तत्कालीन तथा परवर्ती इतिहासकारों ने इन घिनौने कारनामों को छिपाने की कोशिश नहीं की, बल्कि गर्व के साथ उनका वर्णन किया । अपने ज़मीर को धोखा दे सकना आसान है, और

हमें यह भी पता है कि दुनियावी इरादे से लोग कोई काम करना चाहें तो उसके लिए भी धार्मिक औचित्य ढूँढ सकना कितना आसान है। इस्लाम ने आक्रामक को मार-काट की इजाज़त नहीं दी है। शरीअत वाले हिन्दू शासकों पर हुए अवांछित हमले को उचित नहीं ठहराते, और धर्मस्थलों का विनाश हर धर्म में निंदनीय है। फिर भी इस्लाम को जो प्रेरणा का स्रोत न था, और जो कुछ किया गया था। उसके लिए बाद में औचित्य के रूप में इस्तेमाल किया गया।''

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि कोई मुसलमान इस्लाम धर्म की शिक्षा के विरुद्ध आचरण करता है तो उसे इस्लाम की शिक्षा से परिचित मुसलमान अच्छी निगाहों से नहीं देखता और न ही सच्चे मुसलमान की यह पहचान है। हम कभी भी महमूद ग़ज़नवी मो० गौरी, बाबर या किसी भी मुस्लिम शासक को अपना आदर्श नहीं मानते और न ही उनको इस्लाम का प्रतिनिधि समझते हैं। उनके कार्यो को इस्लामी शिक्षा के अनुरूप समझना इस्लाम को बदनाम करना है। अगर कोई मुस्लिम किसी ग़ैर मुस्लिम पर अत्याचार करता है और धर्म का नाम लेता है तो वह इस्लाम की शिक्षाओं से अनभिज्ञ है या इस्लाम की आड़ में शिकार खेलता है। इस्लाम मानवता की शिक्षा देता है दानवता की नहीं, शराफ़त सिखाता है, नीचता नहीं, उदारता एवं सहनशीलता की शिक्षा देता है, अत्याचार और अन्याय की नहीं।

इस्लाम संसार मे शान्ति का द्योतक है वह ईश्वर के समस्त प्राणियों से प्रेम, सहानुभूति, सज्जनता, न्याय एवं सत्यता से कार्य करने की शिक्षा देता है।

दोस्तो ! अगर इस्लाम का प्रारम्भिक परिचय इन मुस्लिम शासको के बजाये इस्लामी ख़लीफ़ाओं से होता, तो हमारे देशबन्धुओं की इस्लाम के प्रति यह धारणा न होती।

अन्त में मैं विश्व विख्यात इस्लामी विद्वान और महान सन्त सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० के उस ऐतिहासिक व्याख्यान का अंश प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो उन्होंने जौनपुर में हिन्दू तथा मुस्लिम विद्वानों की उपस्थिति में दिया था। उन्होंने कहा ''अपने देशवासी भाईयों से मुझे हार्दिक प्रेम है, हमारा आपका भविष्य एक दूसरे से सम्बद्ध है, आप अच्छे, तो हम भी अच्छे, आपका दुःख हमारा दुःख।

ख़ुदा के पैग़म्बर किसी विशिष्ट देश अथवा जाति को संवारने नहीं आए, वह विश्व के लिए करुणा एवं अनुकंपा का रूप धारण करके आए। ''हमने नहीं भेजा मगर आपको सारे जगत के लिए दयावान बनाकर'' हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने आकर अरबों के जातीय घमण्ड को चकनाचूर कर दिया। उन्होंने कहा कि अल्लाह ने तुम्हारे वांशिक अभिमान एवं अहंकार को तोड़ दिया, मैं उसे अपने पैरों से रौंद रहा हूँ, अरबी को अजमी पर कोई श्रेष्ठता नहीं, न अजमी को अरबी पर- तुम सब आदम की संतान हो, और आदम की उत्पत्ति मिट्टी से हुई थी, हम सब एक ही कश्ती (नौका) के सवार हैं। नाव में एक ऊपर की श्रेणी है और एक नीचे की, नीचे वाले यदि उसमें छिद्र करें और ऊपर वाले उनका हाथ न पकड़े, तो नाव डूब जायेगी और नीचे ऊपर वाले सब डूब जायेंगे। आज हमारे देश की जीवन नय्या में छिद्र किया जा रहा है, उसे रोकने का उपाय सोंचे इसमें पाजामें धोती की कोई क़ैद नहीं, किसी विशिष्ट संस्कृति एवं सभ्यता का प्रश्न नहीं, समुद्र किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। हमें ईश्वर ज्ञान तथा समझ प्रदान करे, हृदयों में ज्योति प्रदान करे और हम मानवता के दुःख दर्द की अनुभूति करें। ''अपने इस प्रिय देश को, जिस पर हमारा अधिकार है, जिसको हमने खून पसीने से सींचा है, हम पैग़म्बरों के मार्ग दर्शन द्वारा बनायें, सवारें। हम इसको एक नमूने का देश बना दें, जिसमें आस्था एवं विश्वास, आचार व्यवहार तथा मानवता के प्रति सहानुभूति, त्याग एवं उत्सर्ग का वातावरण हो।''

तो आइये ! हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि सच्चाई, ईमानदारी, न्याय, उदारता, साम्प्रदायिक सदभाव एवं सौहार्द्र के मार्ग पर चलेंगे। आतंकवाद, फ़ासीवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा साम्प्रदायिकता का विरोध करेंगे। हम भ्रष्टाचार, घूस ख़ोरी, शराब ख़ोरी, ड्रग्स, जुआ, दहेज प्रथा, अश्लीलता, नग्नता, बलात्कार, कन्या भ्रूण हत्या आदि के विरुद्ध एक जुट होकर प्रयास करेंगे। हम हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, दलित आदिवासी सभी के बीच भाईचारा पैदा करेंगे, ताकि हमारा देश शान्ति और प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो सके।